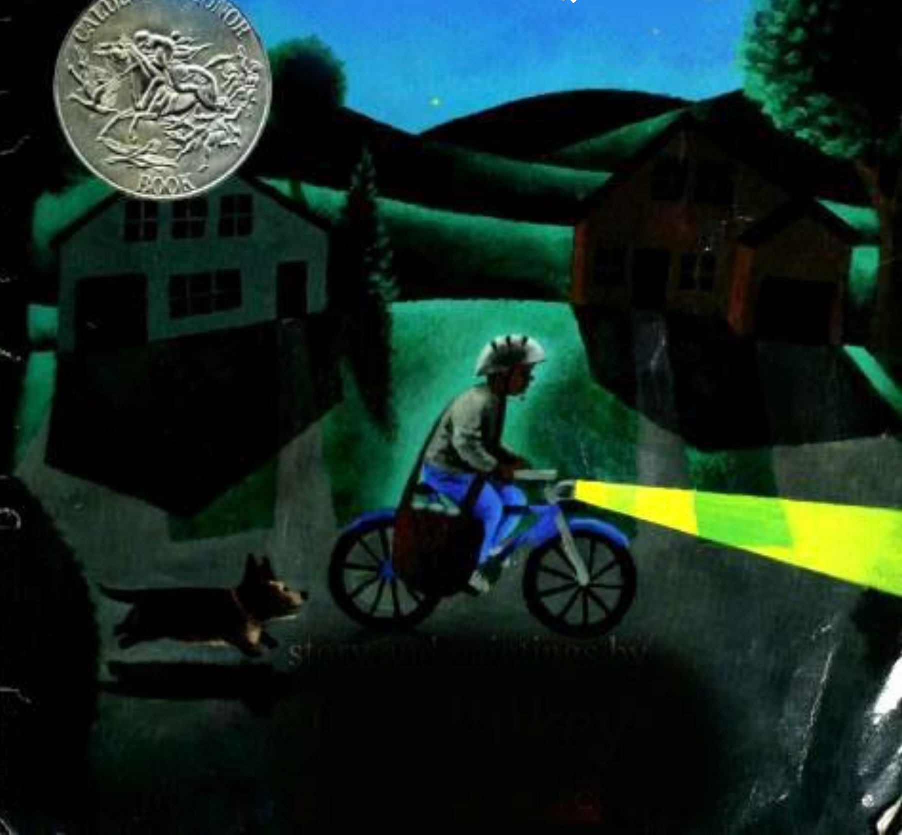
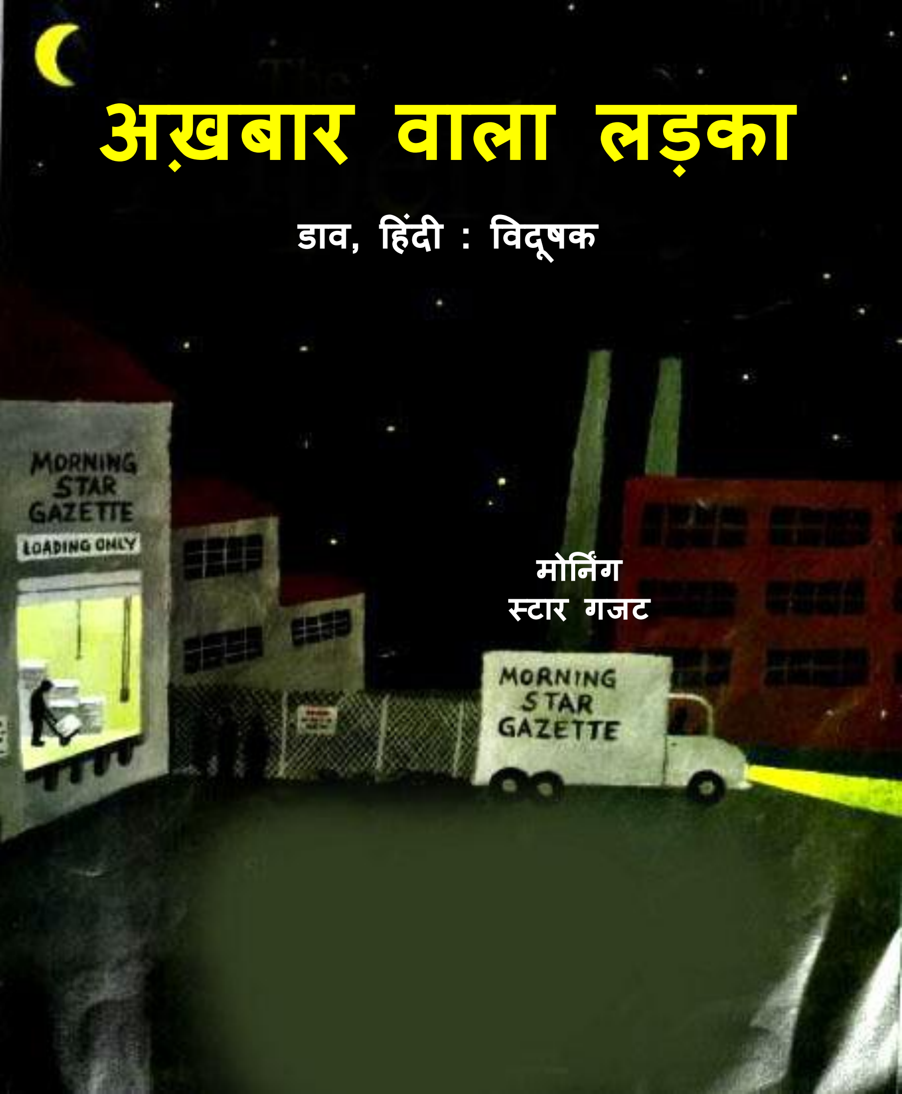
अख़बार वाला लड़का

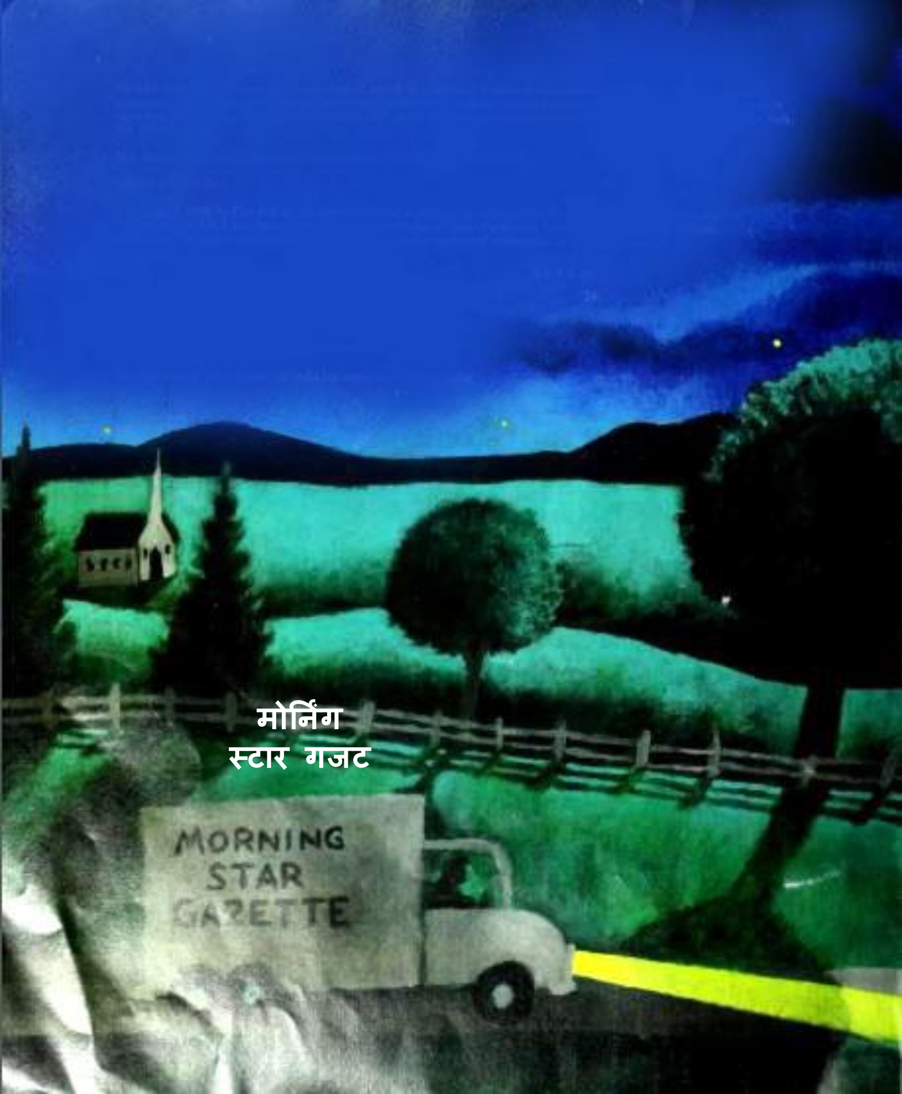
डाव, हिंदी : विदूषक

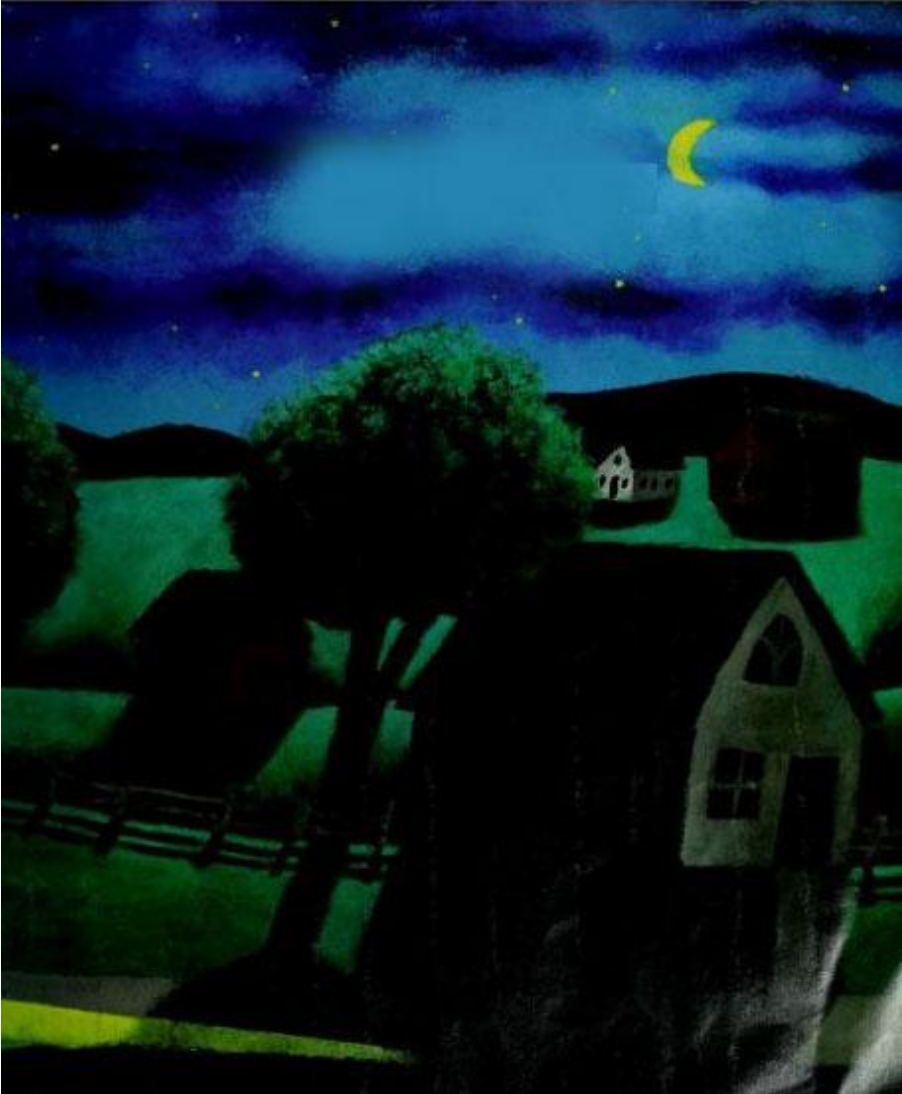


अख़बार वाला लड़का

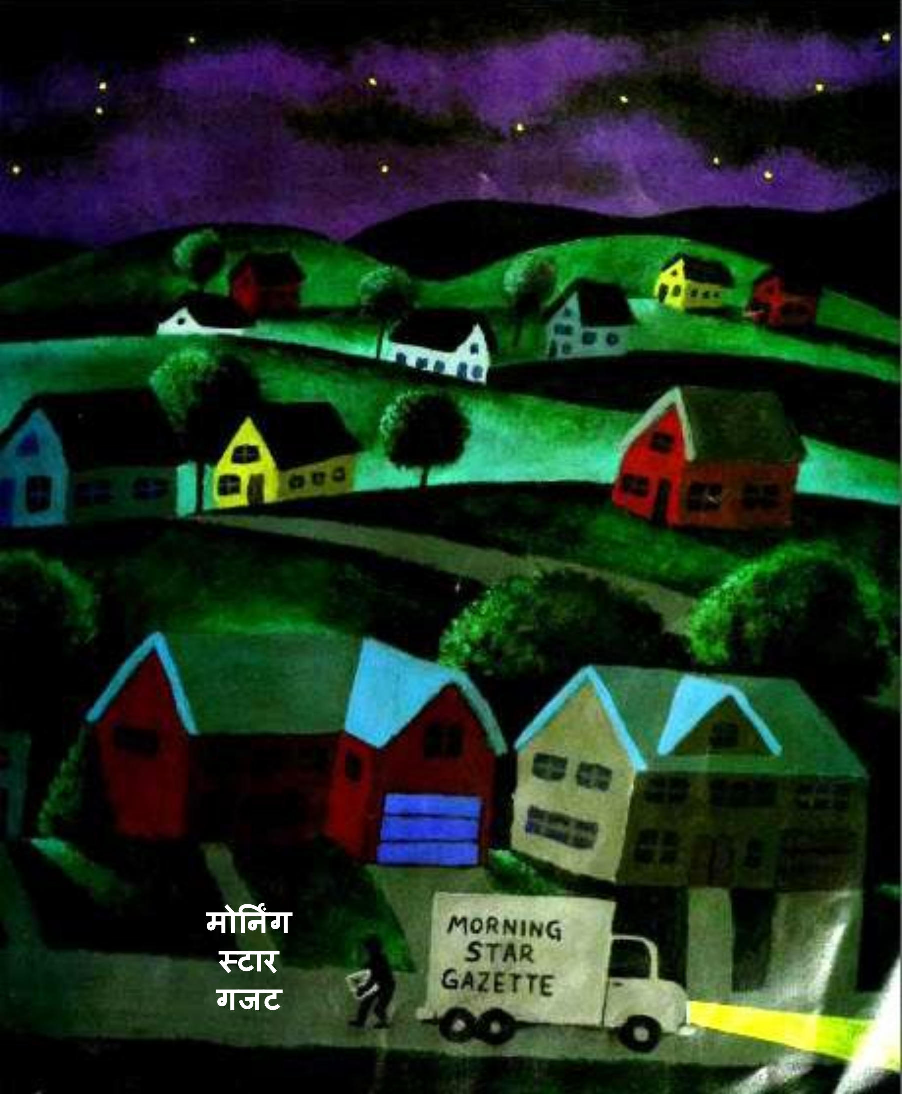
डाव, हिंदी : विदूषक




मोर्निंग
स्टार गजट
MORNING
STAR
GAZETTE

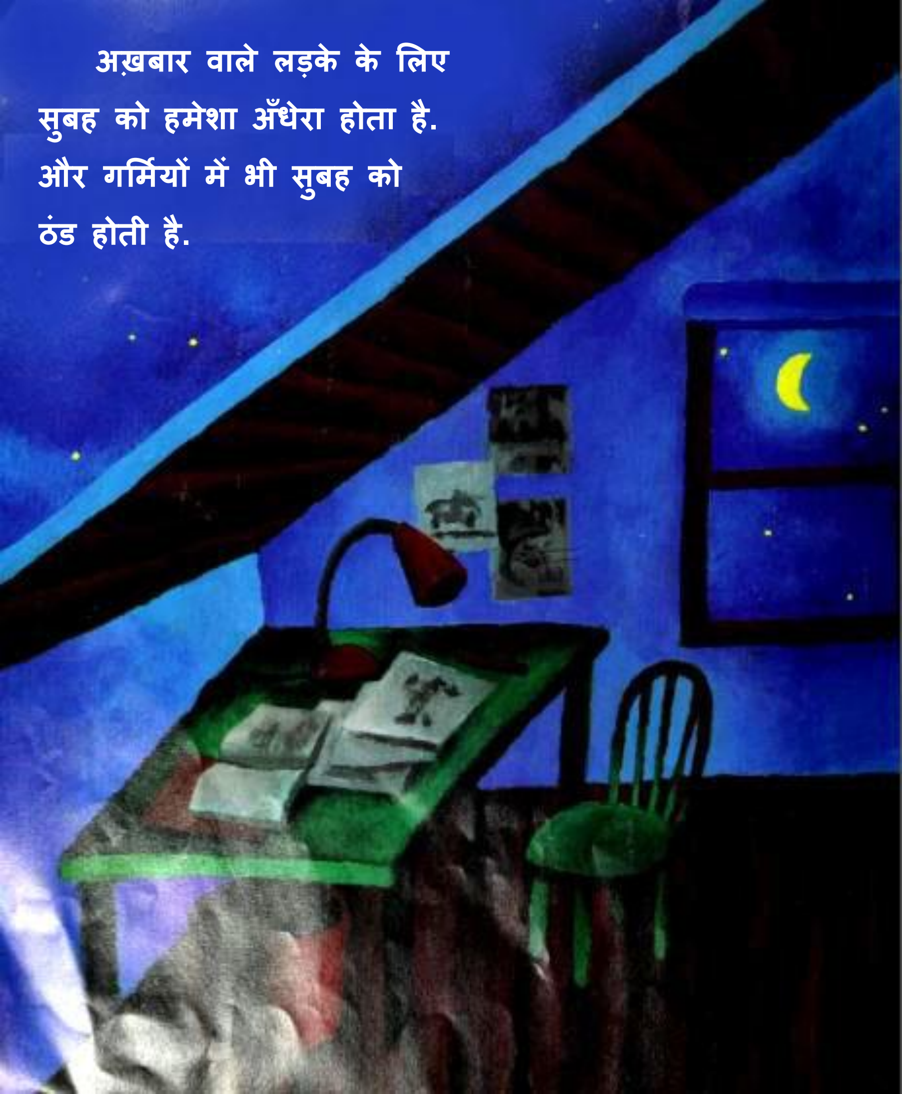






मोर्निंग
स्टार
गजट

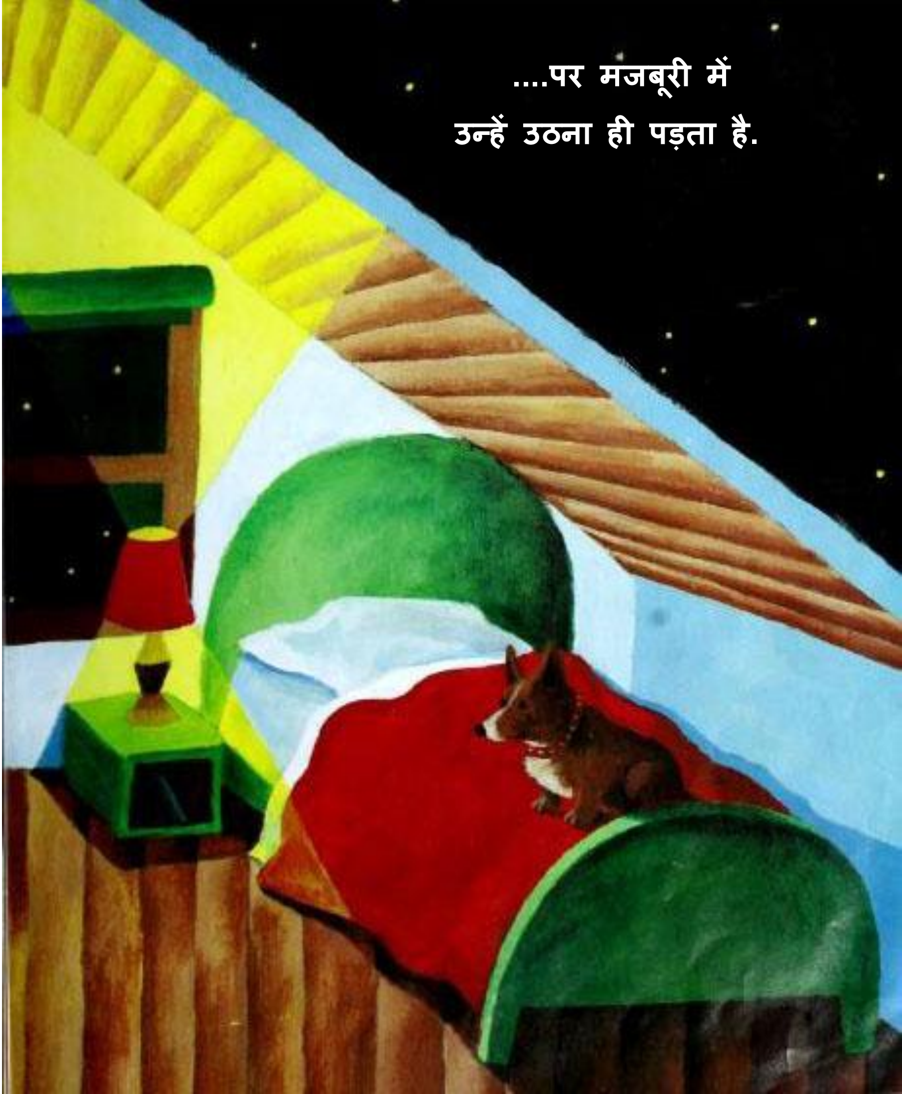
अख़बार वाले लड़के के लिए सुबह को हमेशा अँधेरा होता है. और गर्मियों में भी सुबह को ठंड होती है.



ठंडी सुबह में भी अख़बार वाले लड़के का पलंग हमेशा गर्म होता है. उसके लिए ठंड में उठना हमेशा मुश्किल होता है – उसके कुत्ते के लिए भी....





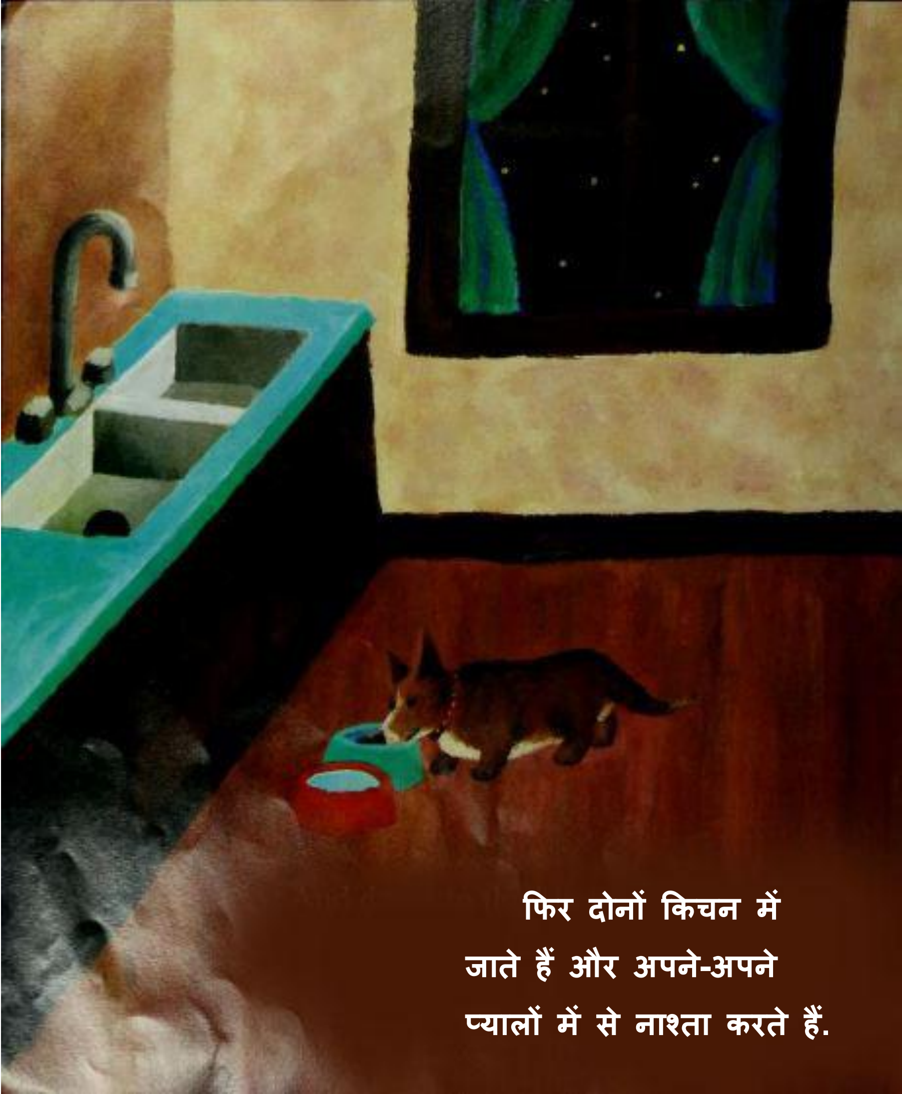

....पर मजबूरी में
उन्हें उठना ही पड़ता है.



फिर वो धीमे क़दमों से सीढ़ियाँ उतरते हैं. वो उस कमरे के सामने से गुज़रते जहाँ लड़के के माता-पिता सोए हैं.



फिर वो उस कमरे के सामने से गुज़रते हैं जहाँ लड़के की बहन सोई है.



फिर दोनों किचन में जाते हैं और अपने-अपने प्यालों में से नाश्ता करते हैं.





उसके बाद वो गैरिज में जाकर अखबार मोड़ते हैं और उन पर हरे रबर-बैंड चढ़ाते हैं. फिर वो उन्हें एक बड़े, लाल थैले में भरते हैं.





भारी अखबारों के लोड के साथ साइकिल चलाना आसान नहीं होता है. पर धीरे-धीरे करके अब अख़बार वाला लड़का साइकिल बड़ी मुस्तैदी से चलाने लगा है.





अख़बार वाले लड़के को अपना रास्ता अच्छी तरह रटा है. किस घर में उसे पहले जाना है? उसे इसके बारे में कुछ सोचना नहीं पड़ता है. वो सीधे वहां पेडल करते हुआ जाता है.



उसके दिमाग में कुछ और ही सोच चल रहा है.

बड़ी चीज़ों के बारे में.

छोटी चीज़ों के बारे में.

कभी-कभी उसके दिमाग में कोई भी विचार नहीं आता है.



कुत्ते को भी रास्ता एकदम रटा है.
उसे मालूम है कि उसे किन पेड़ों को सूंघना है.
उसे पता है कि किन गड्ढों में से उसे पानी पीना है.
उसे किन गिलहरियों का पीछा करना है और किन पर
सिर्फ घुर्राना है.

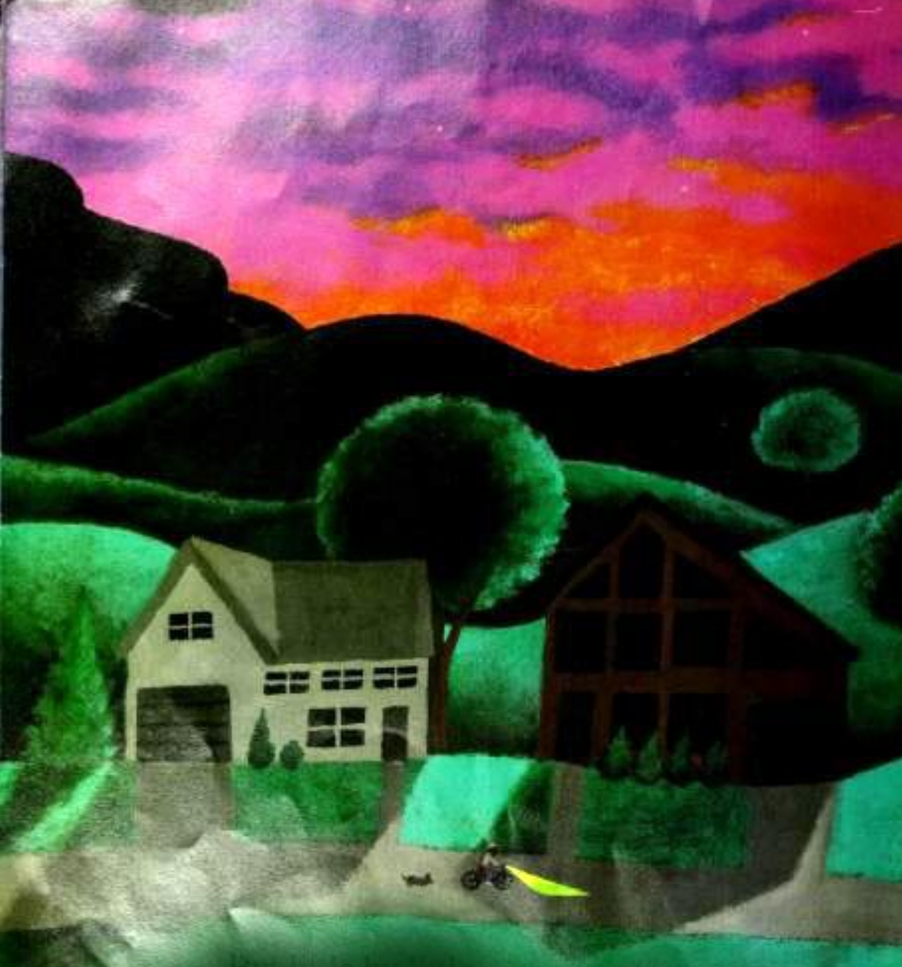




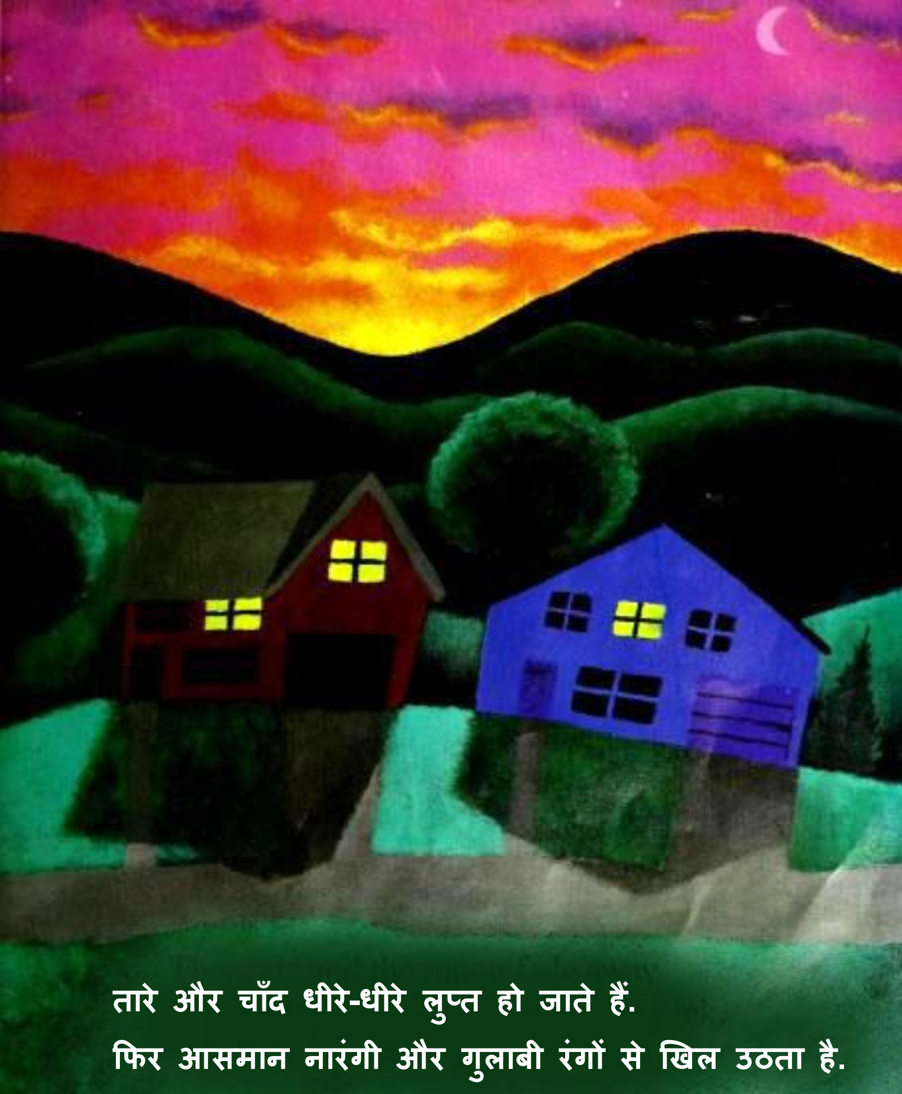
अख़बार वाले लड़के और उसके कुत्ते को छोड़कर अभी पूरी दुनिया सोई है.

पर इस समय वो दोनों सबसे ज्यादा खुश हैं.





धीरे-धीरे करके उनके आसपास की
दुनिया जागती है - अपनी आँखें खोलती है.



तारे और चाँद धीरे-धीरे लुप्त हो जाते हैं.
फिर आसमान नारंगी और गुलाबी रंगों से खिल उठता है.



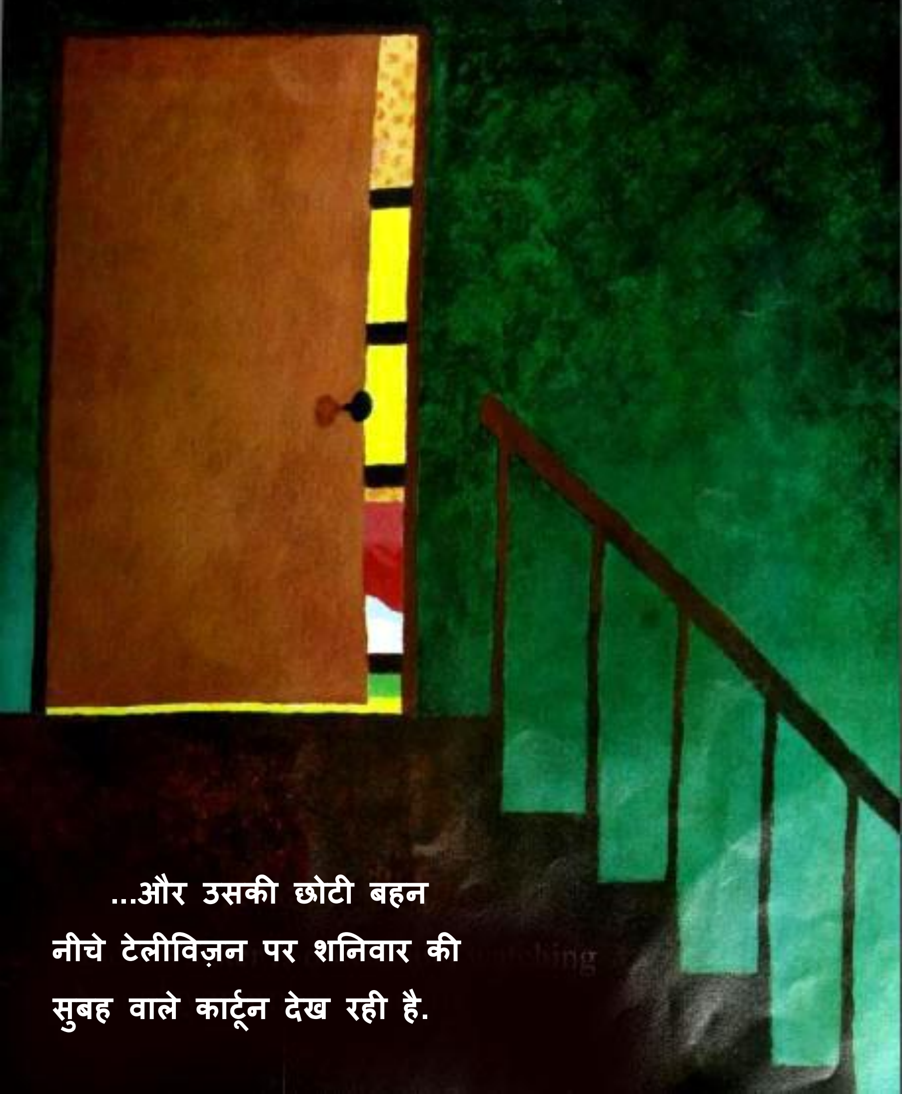
आखिरी अखबार डालने के बाद लड़का और
उसका कुत्ता तेज़ी से घर वापिस लौटते हैं.



लड़के के खाली लाल झोले के फ़्लैप्स
अब ठंडी हवा में तेज़ी से फड़फड़ाते हैं.



कुछ देर में वो घर वापिस पहुँचते हैं.
घर में अन्दर अभी भी अँधेरा है.
पर सुबह का शोर अब सब जगह मौजूद है.
लड़के एक माता-पिता अब उठ गए हैं और पलंग में एक-दूसरे से धीमी आवाज़ में बातें कर रहे हैं.



...और उसकी छोटी बहन
नीचे टेलीविज़न पर शनिवार की
सुबह वाले कार्टून देख रही है.

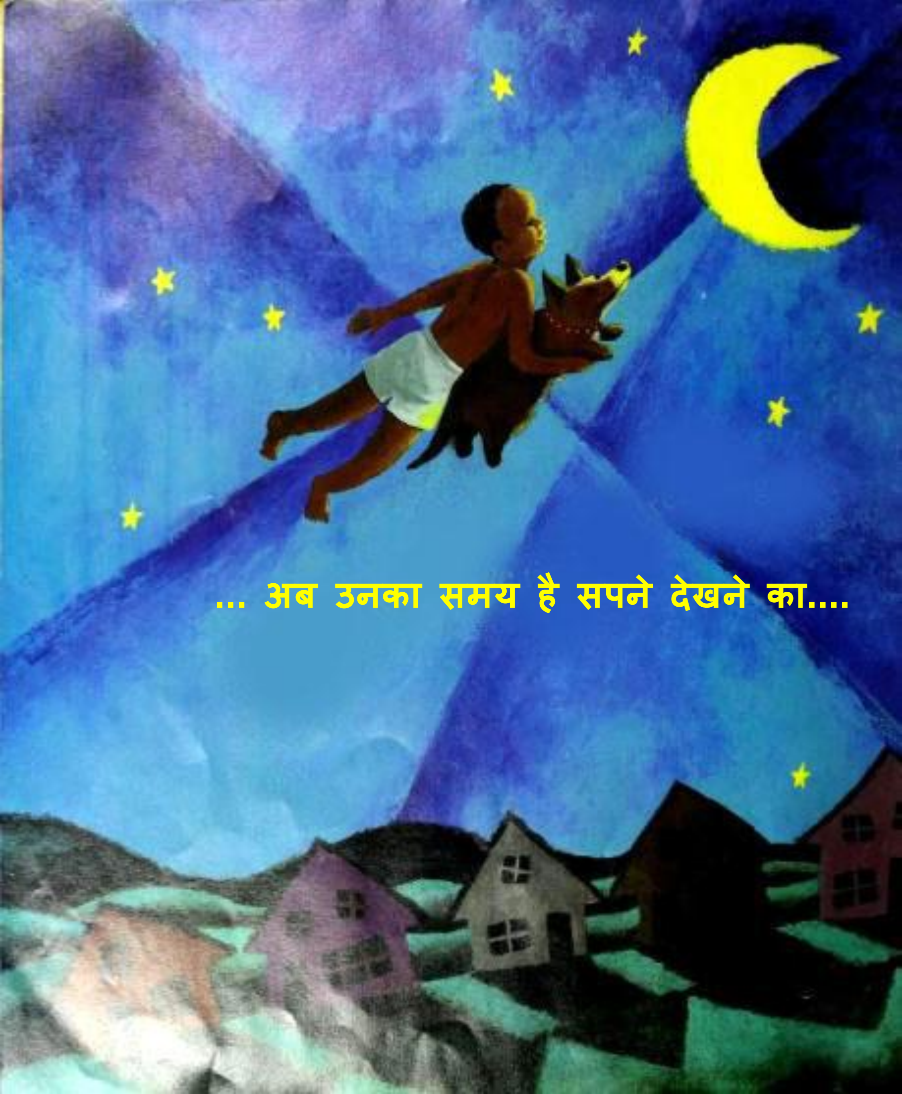
फिर अखबार वाला लड़का अपने कमरे में घुसता है. वो खिड़की का पर्दा खींचकर अँधेरा करता है और दुबारा अपनी रजाई में दुबक जाता है. रजाई अभी भी गर्म है.





और जब बाकी दुनिया जगती है तो अखबार वाला लड़का दुबारा सोने की कोशिश करता है. उसका कुत्ता भी सोता है.

उनका आज का काम अब ख़त्म हो गया है....



... अब उनका समय है सपने देखने का....

